पढ़-लिख समझ बढ़ायेंगे
घर-घर अलख जगायेंगे
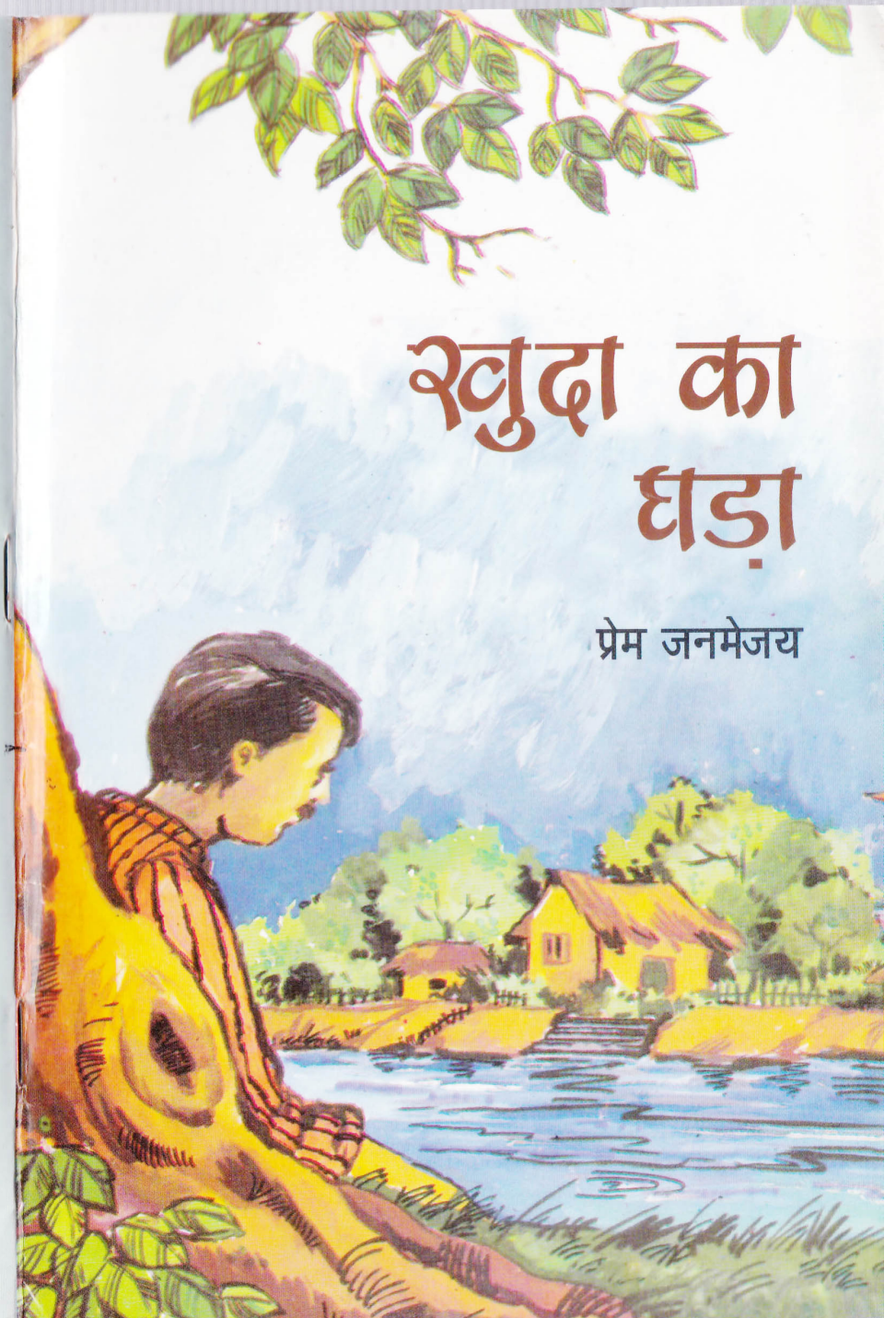
खुदा का घड़ा

प्रेम जनमेजय

खुदा का घड़ा

प्रेम जनमेजय

वाणी प्रकाशन
21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

संस्करण : 2012 © लेखकाधीन ISBN : 978-93-5000-660-3 मूल्य : ₹ 30

नसीम को जब अपने तबादले का पता चला तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वैसे बैंक की नौकरी में तबादला मुसीबत की जड़ समझा जाता है। परन्तु नसीम के लिए तबादला खुशियों का संदेशा था। वह बहुत दिनों से इसका इन्जार कर रहा था।

पिछले आठ बरसों से नसीम दिल्ली में रह रहा है। बी.ए. की परीक्षा पास करने के बाद उसे दिल्ली में जो नौकरी मिली तो वह दिल्ली वाला होकर रह गया। नगमा उसके साथ कालेज में पढ़ती थी। बड़े सादे तरीके से दोनों की शादी हुई। गाँव से नसीम के माँ-बाप ही आ सके।

दिल्ली की भाग-दौड़ ऐसी है कि कोई लाख चाहकर भी नहीं निकल पाता है। उस पर जिंदगी ने ऐसा चक्कर चलाया कि नसीम नून-तेल-लकड़ी और तीन बच्चों की परवरिश में उलझता चला गया।

नसीम स्वभाव से बहुत संतोषी है। धन के पीछे अंधाधुंध दौड़ना उसे अच्छा नहीं लगता है। जो मिल

रहा है उसे खुदा का शुक्र मानता है। इसलिए उसे भाग-दौड़ वाला दिल्ली शहर कभी पसन्द नहीं आया। कहीं कोई अपनापन नहीं है। इस शहर का हर आदमी जैसे किसी मृगतृष्णा के पीछे दौड़ रहा है। पिछले कुछ बरसों से प्रदूषण के धुएँ के काले बादल जैसे इस शहर को निगल रहे हैं। उसके कारण नसीम को अपना दम-सा घुटता लगता है। दूर-दूर तक मकान ही मकान, आदमियों के सर ही सर, कहीं कोई खुलापन नहीं। यही कारण है कि नसीम को रह-रहकर अपने गाँव कल्लापुरा की याद आती है। वहाँ खुली हवा है, चिड़ियों का चहचहाना है, दूर तक फैले खेत हैं। सूरज चाचा, अमरचन्द ताऊ, रशीद भाई, रफीक, मनजीत और इन सबसे बढ़कर गाँव का तालाब है।

गाँव का तालाब। उसकी याद करते ही नसीम को अजीब-सी सिरहन हो जाती है। जैसे तालाब के ठहरे पानी में कंकर मारते ही उसमें लहरें उभरती हैं। गाँव का तालाब, उसके किनारे मंदिर, पास ही मस्जिद। कितने ही मौकों पर सारा गाँव इसके किनारे इकट्ठा हुआ है। जो भी शादी-ब्याह के लिए गाँव बारात लेकर आया या गया, इस तालाब के पास से गुजरा। यहाँ के पानी में कुछ ऐसी बात थी कि गहरी

से गहरी प्यास को बुझा देता था। सारा गाँव इसी तालाब का पानी पीता था। सुबह-सुबह अपने-अपने घड़े के लिए लगभग आधा गाँव इसके किनारे आ पहुँचता। इस बहाने एक-दूसरे का हाल-चाल पता चलता, मेल-मिलाप होता था। आसपास खड़े बड़े-बड़े पेड़ गर्मियों में राहत देते थे। न किसी पंखे की जरूरत थी न किसी कूलर की।

जब-जब नसीम उदास हुआ या अकेला हुआ, इस तालाब ने उसे पुचकारा है। उसे याद है नुसरत बुआ के अचानक मरने के बाद वह यहाँ घंटों बैठकर रोया था। बहुत प्यार करता थ नसीम अपनी बुआ से। बचपन में माँ की गोद में कम बुआ की गोद में ज्यादा खेला है नसीम। परन्तु बीमारी ने वह प्यारी बुआ जल्छी छीन ली। इसी तालाब के पानी में उसे बुआ का चेहरा दिखाई देने लगा था। इसी तालाब के पानी ने उसके आँसुओं को अपने में समेट लिया था। स्कूल में जब-जब मास्टरजी की छड़ी ने पीटा, इस तालाब की शान्ति ने मल्हम लगाई है। तालाब के अकेलेपन में भी उसे लगता था कि कोई उसके साथ है। शहर की भीड़-भाड़ वाली सड़कों पर नसीम अपने आपको अकेला पाता है।

यही कारण है कि बैंक में तरक्की के बाद जब उसे गाँव में तबादले की खबर मिली तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। बैंक में तरक्की के बाद तबादला जरूरी है। तबादला दूर-दूर होता है। इसलिए तबादले के डर से कोई तरक्की नहीं लेता। दिल्ली शहर को गालियाँ भी बकते हैं, उसे छोड़कर जाने के लिए तैयार भी नहीं हैं। जाना तो नगमा भी नहीं चाह रही थी। दिल्ली में बड़ी हुई नगमा को गाँव के नाम से घबराहट होने लगती थी। शहर के और वो भी दिल्ली जैसे शहर के सुख गाँव में कहाँ। बच्चों की पढ़ाई, रहन-सहन आदि के कारण नगमा गाँव नहीं जाना चाह रही थी। परंतु दिनोंदिन बढ़ती महँगाई कमर तोड़ रही थी। रुपए-पैसे की किल्लत ने नगमा को भी गाँव जाने को मजबूर कर दिया।

नसीम ने सामान बांधा और खुशी-खुशी गाँव की ओर चल दिया। पिछले कुछ दिनों से तो उसे सपने भी गाँव के आ रहे थे। उसने अब्बा को चिट्ठी लिख दी थी। जवाब भी आ गया था। अम्मा तो बहुत खुश थीं। अपनी बहू और पोतों का मुँह देखने को तरस रही थीं। गाँव में रहने की दिक्कत तो थी नहीं। अब्बा ने लिखा था कि उन्होंने नसीम के लिए दो कमरे खाली

करा दिए थे। नसीम जानता है वो कमरे नहीं, बड़े-बड़े हाल थे। कहाँ गाँव के विशालकाय कमरे, कहाँ शहर का यह छोटा-सा कमरा।

गाँव के तालाब के किनारे बैठा है नसीम।

आँखों से आँसुओं की बूँदें तालाब के पानी को भिगो रही थीं। नसीम का सपना टूट गया था। तालाब की हालत देखकर उसका दिल टूट गया था। जिस खुशी के साथ वह गाँव लौटा था वह गायब थी। शहर की बीमारी प्लास्टिक के थैले यहाँ भी पहुँच गये थे। जहाँ-तहाँ कूड़े के ढेर की तरह पड़े हुए थे। ये प्लास्टिक के थैले नष्ट नहीं होते हैं। नसीम जानता है कि हमारे पर्यावरण को सबसे ज्यादा नुकसान इन्हीं थैलियों से है। तालाब के पानी के ऊपर काई जमी हुई थी। किनारे पर बहुत कीचड़ था जिसमें भैंसे बैठी थीं और कुछ सुअर भी मजे की नींद ले रहे थे। तालाब के किनारे खाने-पीने की दुकानें भी खुल गयी थीं जिनका गंद तालाब में पड़ता था। आस-पास पेड़ भी कम हो गये थे। गाँव में पानी का नल आ गया था, शायद इसलिए तालाब की ओर कोई ध्यान नहीं देता। परन्तु अम्मा ने बताया था कि कई बार दिनों नल में पानी नहीं आता है। ऐसे में सभी लोग इस तालाब का पानी
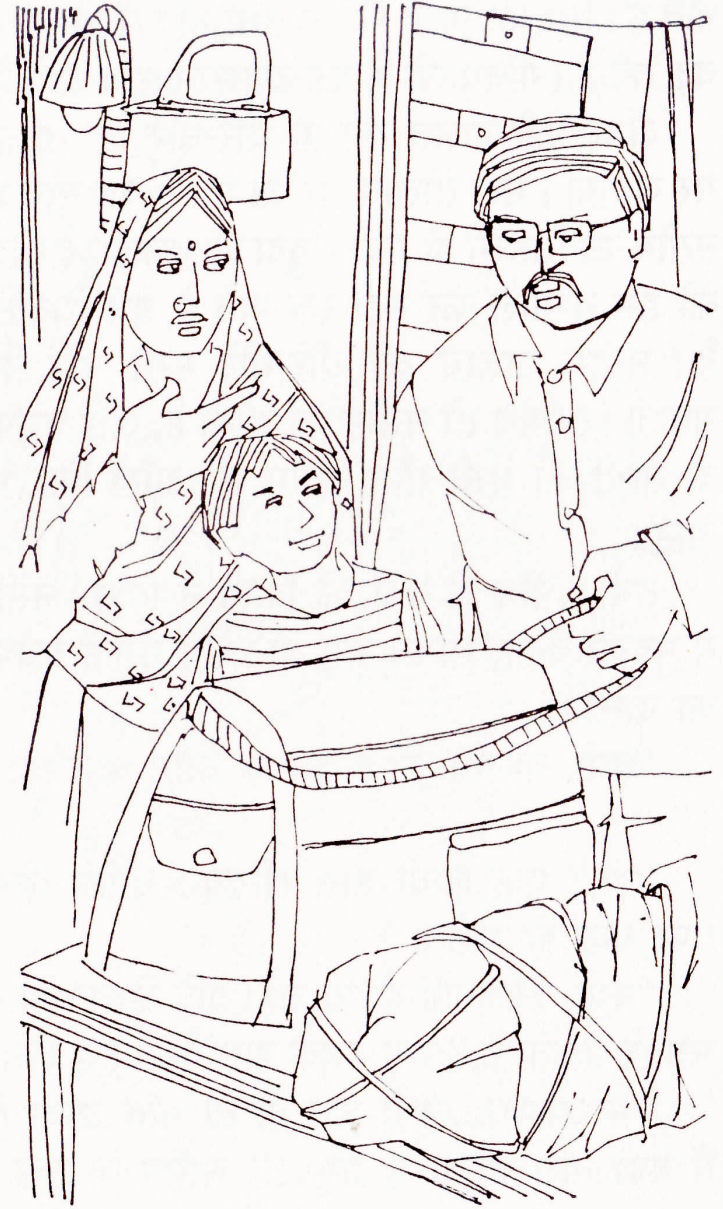
पीते हैं। छिः यह पानी पीते हैं तभी गाँव में बीमारियाँ बढ़ रही हैं। गाँववालों के पेट अक्सर खराब रहते हैं।

अगर यही हालत रही तो धीरे-धीरे यह तालाब मर जाएगा। मेरा तालाब मर जाएगा ! यह सोचकर नसीम को सिहरन हो गयी। खुदा की बनाई हुई चीजों को हम सम्भाल कर नहीं रख पाते हैं, हमें धिक्कार है। नसीम तालाब को धीरे-धीरे मरते नहीं देख सकता। तालाब तो नसीम का साथी है, और बचपन के साथी की ऐसी मौत नसीम की आँखें फिर भर आईं।

तभी नसीम के कंधे को किसी ने छुआ। नसीम ने मुड़कर देखा, सामने रामू था। रामू उसके बचपन का दोस्त।

"क्यों, तालाब की हालत पर आँसू बहा रहा है ?"

"हाँ," एक लम्बी साँस खींचकर नसीम बोला, "पर क्या हो सकता है।"

"क्यों, क्या नहीं हो सकता। यदि हिम्मत हो तो सब हो सकता है," रामू उसके पास बैठते हुए बोला।

"मैं अकेला...अभी कल ही तो गाँव आया हूँ। मैं क्या कर सकता हूँ रामू ?" नसीम के स्वर में

लाचारी थी।

"क्यों नसीम, अगर तुझे पता लग जाए कि तेरे अब्बा बहुत बीमार हैं...तो क्या करेगा ?" रामू ने पूछा

"मैं..."

"हाँ तू," रामू बीच में बोला, "तू एकदम भागकर जाएगा और डॉक्टर को बुलाकर लाएगा...अब्बा का इलाज कराएगा...हाँ कि नहीं..."

नसीम ने सिर हिलाते हुए कहा, "हाँ, बिल्कुल।"

रामू ने नसीम के कंधे पर हाथ रखकर उठते हुए कहा, "तो समझ ले तालाब बीमार हो गया है...जिसे तू जी-जान से चाहता था...वो तालाब बहुत बीमार है।"

दो दिन बाद लगभग सारा गाँव नसीम के घर पर इकट्ठा था।

नसीम के अब्बा ने बेटे, बहू और पोते-पोतियों के घर आने की खुशी में सारे गाँव को न्योता था। बिना किसी जाति-धर्म के भेदभाव के लगभग सारा गाँव मौजूद था।

जब सब खाने पर बैठ गये तो उन्होंने बड़ा रोचक दृश्य देखा। शीशे का एक बहुत बड़ा बर्तन सबके सामने लाया गया। उसमें सात-आठ बाल्टी पानी

नसीम ने डाला। इसके बाद उस पानी में नसीम कूड़ा-करकट, कीचड़, सड़े पत्ते डालने लगा। देखते-देखते पानी कीचड़ में बदल गया। उस पानी से बाल्टी भरकर नसीम ने पास रखे घड़े में डालनी शुरू कर दी। इसके बाद उन्हीं घड़ों का पानी सबको पिलाने के लिए डालने लगा।

सरदार सुखवंत सिंह से यह देखा न गया। वह उठ खड़े हुए और बोले, "अरे जुम्मन मियाँ, यह तुम्हारा बेटा क्या कर रहा है ? क्या हमें बेइज्जत करने के लिए बुलाया हुआ है ?"

जुम्मन मियाँ दौड़कर आये। बोले, 'क्या हुआ सुखवंत, ऐसे क्यों चिल्ला रहा है, क्या कयामत आ गयी है ?"

"कयामत ही आ गयी है। देख तेरा बेटा हमें यह गंदा सड़ा पानी पिला रहा है। यह हमारी सेहत खराब करना चाहता है।" सुखवंत गुस्से में बोला।

"नहीं सुखवंत चाचाजी, मैं तो वही पिला रहा हूँ, जो आप पीते हो," नसीम ने कहा।

"क्या मतलब ?"

"जब नल में पानी नहीं आता है तब आप लोग तालाब का पानी ही पीते हो ना !" नसीम ने पूछा।

"हाँ !"

"हमारे तालाब का पानी तो इससे भी गया बीता है। चाचाजी हमारे गाँव में जो पेट की बीमारियाँ घर-घर में बढ़ रही हैं उसका कारण तालाब का पानी है।"

"तो क्या हम तालाब को खत्म नहीं कर दें।"

"नहीं, चाचाजी," यह कहकर नसीम सभी बैठे हुए लोगों से बोला, "मैं आप लोगों से कुछ कहना चाहता हूँ। मैं गाँव में बड़ी खुशी से आया था, परन्तु गाँव में तालाब की हालत देखकर रो पड़ा। आप सब बुजुर्ग तो जानते ही हैं कि इस तालाब का पानी कितना मीठा था, कितनी राहत मिलती थी इसके पानी से। पर अब इस तालाब के चारों ओर कितनी गन्दगी है। जैसे हम अपने घरों में रखे घड़ों में साफ पानी भरते हैं, उनकी सफाई करते हैं, वैसे ही हमें तालाब की करनी होगी। यह तालाब तो खुदा का घड़ा है।"

"खुदा का घड़ा..." आश्चर्य से रफीक मियाँ बोले।

"हाँ, खुदा का घड़ा...जानते हैं बरसात के पानी से साफ-सुथरे पानी कोई नहीं होता...वह पानी हमारे तालाबों, कुँओं में इकट्ठा होता है। ये तालाब खुदा

के दिए हुए घड़े हैं जो हमारे लिए पानी इकट्ठा करते हैं। अब इसकी साफ-सफाई का इंतजाम हमारा है।''

''लड़का ठीक कह रहा है''...अमरचन्द ताऊ बोले, ''पर इस घड़े की सफाई कैसे होगी ?''

यह सुनकर नसीम बोला, ''श्रमदान...श्रमदान से यह सब होगा। सबको तालाब की सफाई का काम करना होगा...बोलो कौन-कौन करेगा मेरे साथ काम ?''

''हम करेंगे...'' इतनी आवाजों को सुनकर नसीम की आँखों में खुशी के आँसू आ गये। उसे लगा उसका टूटा सपना जुड़ रहा है।

एक महीने के श्रमदान ने तालाब को चमका दिया। खुदा का घड़ा शुद्ध, पवित्र और निर्मल बन गया था। आज सभी लोग तालाब के पास खड़े उसे निहार रहे थे। नई रोशनी के नए लड़के नसीम ने गाँव की कायापलट ही कर दी थी। तभी रिमझिम पानी बरसा। खुदा के घड़े में भी रिमझिम पानी बरसा।